

डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 10

रहस्योद्घाटन 5 और 6

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र 10, प्रकाशितवाक्य 5 और 6, मेमना और स्कॉल की मुहरों का परिचय है।

मेमना और पुस्तक की मुहरों का परिचय। तो, मसीह ने सिंहासन पर बैठे व्यक्ति के दाहिने हाथ से पुस्तक ले ली है, वह पुस्तक जिसमें उसके राज्य की स्थापना के लिए भगवान की योजना शामिल है।

और अध्याय 5 का मुद्दा, जैसा कि हमने देखा है, यह है कि यीशु ही योग्य है, स्कॉल लेने के लिए एकमात्र योग्य है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि वह वध किया हुआ मेमना है, जो मारा गया है। वह वही है जिसने पूरी मानवता से लोगों को याजकों का राज्य बनने के लिए खरीदा है, जैसा कि हम देखेंगे।

और यह उनकी मृत्यु, क्रूस पर उनकी बलिदान मृत्यु, फसह के मेमने के रूप में, शायद यशायाह 53 में पीड़ित नौकर मेमने के रूप में भी आधारित है, कि यीशु अब पुस्तक लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य हैं, जिसका अर्थ है कि वह अब स्थापित करेंगे इसकी सामग्री गति में है। अध्याय 5 का शेष भाग वास्तव में श्लोक 7 में जो होता है उसकी प्रतिक्रिया है, जो श्लोक 8 से शुरू होता है, जहाँ हम इस कृत्य पर स्वर्ग की प्रतिक्रिया देखना शुरू करते हैं। तो, 8 से शेष अध्याय 5 तक पूरे स्वर्ग की प्रतिक्रिया होगी।

हमें पहले ही 24 बुजुर्गों और चार जीवित प्राणियों से परिचित कराया जा चुका है, लेकिन हमें अन्य देवदूत प्राणियों से भी परिचित कराया जाएगा जो स्वर्गीय सिंहासन कक्ष में रहते हैं। अध्याय 5 के शेष भाग में श्लोक 7 में जो कुछ हुआ, उस पर उनकी प्रतिक्रिया स्पष्ट होगी, जिसमें मेमना पुस्तक उठा रहा है। ध्यान दें कि आपके अनुवाद के आधार पर, श्लोक 8 से लेकर अध्याय 5 के अंत तक कितनी बार शब्द लेना या प्राप्त करना आता है, क्योंकि इस खंड का शेष भाग वास्तव में भजनों का एक खंड है।

हमें कुछ भजनों से परिचित कराया गया था जो अध्याय 4 में 24 बुजुर्गों और चार जीवित प्राणियों द्वारा गाए गए थे, लेकिन अब हम देवदूत प्राणियों द्वारा अधिक से अधिक व्यापक गायन और भजन देखेंगे क्योंकि वे मेमने के श्लोक 7 में इस कार्यक्रम का जश्न मनाते हैं। स्कॉल ले रहा हूँ। और मुझे लगता है कि ये सभी भजन श्लोक 7 की व्याख्या करने या श्लोक 1 से 7 में जो अभी हुआ है उसके दृश्य की व्याख्या करने के लिए कार्य करते हैं। अब, ध्यान में रखने योग्य एक महत्वपूर्ण पाठ विशेष रूप से अध्याय 5 के पीछे है, और हमने कहा है कि अध्याय 4 और 5 एक साथ हैं।

चीजों में से एक जो सुझाव देती है वह यह है कि न केवल समान कल्पना होती है, जैसे कि सिंहासन और सिंहासन पर बैठा व्यक्ति, और 24 बुजुर्ग और चार जीवित प्राणी, और कुछ समान चरित्र और विशेषताएं, बल्कि तथ्य भी कि उन दोनों के पीछे वही पुराने नियम के पाठ छिपे हैं। वह यह जकेल अध्याय 1 और 2, साथ ही यशायाह अध्याय 6 है। भविष्यवक्ताओं द्वारा सिंहासन कक्ष के दोनों दर्शन अब जॉन के दर्शन के लिए मॉडल प्रदान करते हैं। एक और महत्वपूर्ण पाठ है जो विशेष रूप से अध्याय 5 में आता है, और वह पाठ है जिसे हम पहले ही अध्याय 1 में एक भूमिका निभाते हुए देख चुके हैं, जहां यीशु जॉन को सात चर्चों को संबोधित करने का आदेश देने के लिए एक उद्घाटन दृष्टि में प्रकट होते हैं, जहां डैनियल अध्याय 7 की पूर्ति में यीशु को मनुष्य के पुत्र, मनुष्य के महान पुत्र के रूप में चित्रित किया गया है। और डैनियल अध्याय 7 में, विशेष रूप से छंद 13 और 14 में, हम यही पढ़ते हैं : रात में मैंने अपने दर्शन में देखा, और वहां मेरे सामने मनुष्य का पुत्र जैसा कोई था, जो स्वर्ग के बादलों के साथ आ रहा था।

वह प्राचीन काल के पास पहुंचा और उसे उसकी उपस्थिति में ले जाया गया। तो, यहाँ अध्याय 5 में यीशु, सिंहासन पर बैठे व्यक्ति के पास आ रहे हैं। और अब, श्लोक 14 में, उसे अधिकार, महिमा और संप्रभु शक्ति दी गई।

सभी लोगों, राष्ट्रों और हर भाषा के लोगों ने उसकी पूजा की। उसका प्रभुत्व एक शाश्वत प्रभुत्व है जो नष्ट नहीं होगा, और उसका राज्य ऐसा है जो कभी नष्ट नहीं होगा। तो, दानियेल अध्याय 7, जो मनुष्य के पुत्र को सिंहासन के निकट आते हुए चित्रित करता है, प्राचीन काल का, सिंहासन पर बैठा हुआ, अब अधिकार और शक्ति प्राप्त करता है, अब उससे एक राज्य प्राप्त करता है और उसके राजसी शासन में प्रवेश करता है।

वह अब मेमने के सिंहासन पर बैठे व्यक्ति से पुस्तक प्राप्त करके, और शक्ति और अधिकार प्राप्त करके उसके शासन में प्रवेश करने के साथ पूरा हो गया है। वास्तव में, हम देखेंगे कि भजन बिल्कुल इसी का जश्न मनाते हैं। भजन शक्ति, अधिकार, शक्ति, ज्ञान, महिमा और सम्मान के स्वागत का जश्न मनाते हैं।

वही चीजें जिन्हें हम दानियेल अध्याय 7 में प्रत्याशित पाते हैं। इसलिए, अध्याय 5 में यह कार्य दानियेल अध्याय 7 की पूर्ति है, जहाँ अब यीशु को अपना राजसी अधिकार प्राप्त होता है। इसका मतलब यह है कि जब हम अध्याय 5 पढ़ते हैं, तो हमें शायद इसे इतना नहीं पढ़ना चाहिए, या सिर्फ एक सिंहासनारोहण दृश्य के रूप में नहीं पढ़ना चाहिए, जैसे कि यीशु अब सिंहासन पर ले जाया गया है और अब सिंहासन पर बैठता है, जितना कि इसे देखना चाहिए जिसे डेविड औने ने अपनी टिप्पणी में अलंकरण दृश्य कहा है। अर्थात्, यीशु के पास अब अधिकार और शक्ति आ गई है, और प्रश्न 3 इसी के बारे में था।

वास्तव में कौन इस योग्य है कि इस पुस्तक को ग्रहण करके खोले? अधिकार किसके पास है? ऐसा करने के योग्य कौन है? और अब, मसीह का जश्न मनाया जाता है, इस घटना का जश्न मनाया जाता है, क्योंकि मसीह के पास अब स्कॉल लेने की शक्ति और अधिकार है, यानी, भगवान का राज्य प्राप्त करने के लिए, और अब स्कॉल की सामग्री को अधिनियमित करने के लिए। फिर मैं जो करना चाहता हूं, वह यह है कि, जैसा कि हमने अन्य ग्रंथों में किया है, इस खंड की कुछ

अधिक महत्वपूर्ण विशेषताओं पर प्रकाश डालें, विशेष रूप से श्लोक 8 से 12 तक, जो, फिर से, पद्य में जो होता है उसका भजनात्मक उत्सव है। 7, और वह यह है कि मसीह को अब पुस्तक लेने और खोलने का अधिकार प्राप्त हो रहा है। सबसे पहले, एक बार फिर महत्व पर ध्यान दें, कि मंदिर की कल्पना अध्याय 5 में दिखाई देती है, और हम पहले ही अध्याय 4 और 5 में कुछ विशेषताएं देख चुके हैं जो सुझाव देते हैं कि यह सिर्फ स्वर्ग की तस्वीर नहीं है, बल्कि स्वर्ग है भगवान के मंदिर की कल्पना की जा रही है, एक स्वर्गीय मंदिर जहां भगवान निवास करते हैं, और उनमें से एक सुनहरे बैल की उपस्थिति है।

पद 8 पर ध्यान दीजिए, और जब उस ने उसे ले लिया, तो चारों प्राणी और चौबीस पुरनिये मेघों के साम्हने गिर पड़े ; हर एक के पास वीणा थी, और उनके हाथ में धूप से भरे हुए सोने के बैल थे। उदाहरण के लिए, सुनहरे बैल शायद उन बैलों का सुझाव देते हैं जो निर्गमन अध्याय 25 में तम्बू में उपस्थिति की मेज पर थे। यह दिलचस्प है कि प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब में सुनहरे बैल कम से कम बारह बार आते हैं, और यहाँ, फिर से, वे यह संकेत देने के लिए कार्य करते हैं कि इसे एक स्वर्गीय मंदिर के रूप में देखा जाना चाहिए।

शायद स्वर्गदूतों का अभिप्राय चार प्राणियों से है, और चौबीस बुजुर्गों को इस तथ्य से पुरोहिती कार्य के रूप में चित्रित किया जाना है कि वे इन सुनहरे बैलों को धारण करते हैं, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि उनमें धूप शामिल है, जिसे लेखक ने पहचाना है श्लोक 8 में संतों की प्रार्थना के रूप में। अब, यह महत्वपूर्ण हो जाएगा क्योंकि बाद में, विशेष रूप से अध्याय 6 में, पांचवीं मुहर में, धूप, और बाद में प्रकाशितवाक्य में, धूप को संतों की प्रार्थना के रूप में पहचाना जाएगा। , जिसका भगवान जवाब देते हैं। वह भगवान है, संतों की प्रार्थना उन्हें सही ठहराने के लिए, यह दिखाने के लिए कि उनकी पीड़ा व्यर्थ नहीं थी, न्याय दिलाने के लिए, इसे संतों की प्रार्थना के रूप में चित्रित किया गया है। तो, इसका मतलब यह है कि हमें शेष अध्याय 6 से 20 तक को संतों की प्रार्थना की प्रतिक्रिया के रूप में देखना है, जिनकी पहचान धूप से भरे बैलों से की जाती है।

इसलिए, जब हम रहस्योद्घाटन के माध्यम से काम करते हैं तो हम उस पर गौर करेंगे और सुनहरे बैलों को उभरते हुए देखेंगे और देखेंगे कि वे समय-समय पर कैसे कार्य करते हैं। इस खंड के बारे में ध्यान देने योग्य दूसरी बात यह है कि श्लोक 8 से अध्याय 5 के अंत तक, पूजा में स्वर्ग कैसे प्रकट होता है। श्लोक 7 के जवाब में, स्वर्ग निरंतर व्यापक संकेंद्रित वृत्तों में पूजा में टूट जाता है।

तो, फिर से, आपके पास यह तस्वीर है जहां सिंहासन सभी चीजों के केंद्र में है, और फिर स्वर्गीय प्रतिक्रिया लगातार व्यापक संकेंद्रित वृत्तों में बाहर की ओर बढ़ती है। तो, श्लोक 8 में ध्यान दें, यह 24 बुजुर्ग और चार जीवित प्राणी हैं, जो श्लोक 9 में यह गीत गाते हैं। आप पुस्तक लेने के योग्य हैं, और ध्यान दें कि पुस्तक को सीधे पद 7 से जोड़ते हुए, और उसकी मुहरें खोलें।

इसका कारण यह है कि तुम मारे गए, और अपने लहू से तुम ने हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया। तू ने उन्हें हमारे परमेश्वर की सेवा करने के लिये याजकों का राज्य बना दिया है, और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे। तो, 24 बुजुर्गों और चार जीवित प्राणियों से शुरुआत करते हुए, जिनसे हमें अध्याय 4 में परिचित कराया गया था, अब

वे सिंहासन के चारों ओर स्तुति का गीत गाने वाले पहले व्यक्ति हैं, जो पद 7 में जो हुआ, उसका जश्र मनाते हुए मेम्रे द्वारा पुस्तक को ले लिया गया।

वे यहाँ इसका कारण स्पष्ट रूप से देते हैं क्योंकि वह मारा गया था, और उसकी मृत्यु के माध्यम से, उसने मानवता के लिए मोक्ष खरीदा। लेकिन ध्यान दें, दूसरा, श्लोक 11 में, जॉन कहता है, फिर मैंने देखा, और मैंने कई स्वर्गदूतों की आवाज़ सुनी, जो हजारों-हजारों और दस हजार गुना दस हजार थे। उन्होंने सिंहासन और जीवित प्राणियों और पुरनियों को घेर लिया।

तो, अब आपके पास एक और परत है, स्वर्गदूतों के असंख्य, या हजारों हजारों, और दस हजार हजारों, सिंहासन को घेरते हुए, और वे गाते भी हैं, शक्ति, धन और ज्ञान प्राप्त करने के लिए, वध किया गया मेम्रा योग्य है, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और प्रशंसा। लेकिन फिर, अंत में, पद 13 में, यूहन्ना कहता है, तब मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र में, और जो कुछ उन में है, सब प्राणियों को सुना। तो, अब आपके पास एक चक्र है जो मूल रूप से पूरी सृष्टि को शामिल करता है, गाते हुए, पद 13 में जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने के लिए, हमेशा और हमेशा के लिए स्तुति, और सम्मान, और महिमा, और शक्ति हो।

तो, स्वर्ग सिंहासन के चारों ओर केन्द्रित व्यापक, संकेन्द्रित वृत्तों में पूजा में फूट पड़ता है, जहां अंततः, सभी चीजें, सारी सृष्टि, केंद्र पर केंद्रित होती है। फिर, सब कुछ केंद्र से बहता है। भगवान का शासन और सब कुछ जो अध्याय 4 से 22 में घटित होने वाला है, वास्तव में 6 से 22, अध्याय 5 के बाद, सब कुछ केंद्र से, सिंहासन से प्रवाहित होता है, और अंततः सारी सृष्टि पूजा में शामिल हो जाती है।

शायद हम यहां जो देख रहे हैं वह अध्याय 21 और 22 में अंतिम दृश्य की प्रत्याशा है, जहां सारी सृष्टि तब भगवान के शासन के अधीन आती है और भगवान की संप्रभुता को स्वीकार करती है। नंबर तीन, कहने वाली तीसरी बात इस अध्याय का मुद्दा है, विशेष रूप से उस पहले भजन में जिसे 24 बुजुर्ग और चार जीवित प्राणी गाते हैं, और अध्याय 5, छंद 5 और 6 में ईसा मसीह का दर्शन भी है, कि मेमना निश्चित रूप से योग्य है क्योंकि क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से, उसने मानवता के लिए मुक्ति हासिल की है। एक दिलचस्प बात जो हम पहले ही देख चुके हैं वह यह है कि लेखक ने काबू पाने या जीतने की एक दिलचस्प अवधारणा तैयार की है।

और याद रखें, हमने कहा कि यह दृश्य जॉन के यह सुनने के साथ शुरू हुआ कि कोई था जो पुस्तक खोलने के योग्य था, जिसने विजय प्राप्त की थी और उसने ऐसा किया था क्योंकि वह यहूदा के गोत्र का शेर था। जब जॉन इस शख्स को देखने के लिए मुड़ता है तो उसे शेर नहीं बल्कि एक मारा हुआ मेमना नजर आता है। दिलचस्प बात यह भी है कि श्लोक 5 और 6 में इस मेमने को सात आँखों वाले सात सींगों वाला बताया गया है, जो फिर से एक बहुत ही सैन्यवादी छवि को दर्शाता है और शक्ति और शक्ति को दर्शाता है।

वास्तव में, उदाहरण के लिए, सात सींग वाले मेमने की यह छवि यहूदी सर्वनाशी साहित्य में कहीं और पाई जाती है। यह प्रारंभिक सर्वनाशों में से एक का एक पाठ है जो पुराने या नए नियम में नहीं पाया जाता है, लेकिन प्रभावशाली सर्वनाश में एक बहुत ही सामान्य पाठ है जिसे 1 हनोक

की पुस्तक कहा जाता है। विभिन्न व्यक्तियों और राष्ट्रों के प्रतीक के रूप में जानवरों का उपयोग करते हुए अपने एक दर्शन में, उन्होंने एक ऐसे मेमने की कल्पना की जिसके सींग बढ़ते हैं और जिसके पास ताकत और महान सैन्य शक्ति है।

और यह 1 हनोक अध्याय 90 है। लेखक कहता है, तब देखो, बर्फ जैसी सफेद भेड़ में से मेम्रे उत्पन्न हुए, और वे आंखें खोलकर देखने लगे, और भेड़ों को चिल्लाने लगे। परन्तु भेड़-बकरियों ने उनको ऊंचे शब्द से पुकारा, तौभी उन्होंने न माना, कि मेम्रे उन से क्या कह रहे थे।

परन्तु वे बहुत बहरे हो गए, और उनकी आंखें बहुत धुंधली हो गईं। फिर मैं ने स्वप्न में कौवों को मेमनों के ऊपर उड़ते हुए देखा, और उन्होंने उन मेमनों में से एक को छीन लिया, और भेड़ को चूर-चूर करके खा गए। मैं तब तक देखता रहा जब तक उन मेमनों के सींग नहीं बढ़ गए, परन्तु कौवों ने उनके सींगों को कुचल डाला।

फिर मैं तब तक देखता रहा, जब तक कि एक भेड़ में से एक बड़ा सींग न उग आया, और उस ने उनकी आंखें खोल दीं। उन्हें एक दर्शन हुआ और उनकी आंखें खुल गईं। और उस ने भेड़-बकरियोंको ऊंचे शब्द से पुकारा, और सब मेढ़ोंने उसे देखा, और उसके पास दौड़े। मैं वहीं रुकूंगा, लेकिन मुद्दा यह है कि शक्ति और शक्ति का संकेत देने वाले सींगों वाली भेड़ की छवि पर ध्यान दें।

लेकिन एक बार फिर, जॉन ने यह प्रदर्शित करके पुनर्व्याख्या की कि, कम से कम शुरुआत में, मेमना जीतने के लिए आता है, सींग वाला मेमना जीतने के लिए आता है, लेकिन वह ऐसा एक मारे गए मेमने के रूप में करता है, जो खरीदता है, जो स्कॉल खोलने के योग्य है, क्योंकि वह मारा गया था, और अपने खून के माध्यम से, उसने मानवता को खरीदा और अपने लिए छुड़ाया। ध्यान देने योग्य अगली बात यह है कि इस खंड में, हम पहले ही इसके संकेत देख चुके हैं, कि मेमना एक अद्वितीय विशेषता, एक अद्वितीय व्यक्ति प्रतीत होता है। अर्थात् यूहन्ना सारी पृथ्वी, और पृथ्वी के नीचे, और सारे आकाश में ढूंढ़ चुका है, और किसी को योग्य न पाया।

तो, मेमना, अब जब मेमना योग्य पाया गया है और वह आसानी से चल सकता है और सिंहासन पर बैठे व्यक्ति के दाहिने हाथ से पुस्तक ले सकता है, तो सवाल उठता है: यह किस तरह का व्यक्ति है? यह किस प्रकार का मेमना है? यह पृथ्वी पर, पृथ्वी के नीचे, या यहाँ तक कि स्वर्ग में किसी भी अन्य व्यक्ति से भिन्न है। लेकिन अब, इस खंड के बाकी हिस्सों में, इस भजन खंड में, मुझे लगता है कि हमें नए नियम में कहीं भी मसीह के ईश्वरत्व के लिए सबसे मजबूत बयानों में से एक मिलता है। ध्यान दें कि मसीह को कुछ वैसी ही पूजा प्राप्त होती है जैसी भगवान को अध्याय 4 में मिलती है। उदाहरण के लिए, श्लोक में ध्यान दें, विशेष रूप से श्लोक 12 में, वह मेमना योग्य है जो शक्ति, और धन, और ज्ञान, और ताकत, और प्राप्त करने के लिए मारा गया था। आदर, और महिमा, और प्रशंसा।

अध्याय 4 के श्लोक 11 पर वापस जाएँ, जो भगवान के लिए गाया गया भजन है। हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू महिमा, और आदर, और सामर्थ्य पाने के योग्य है, क्योंकि तू ने ही सब वस्तुएं सृजिं, और वे तेरी ही इच्छा से सृजी गईं, और अस्तित्व में हैं। तो, यीशु मसीह वास्तव में, समान

शब्दों में भी, शक्ति, और महिमा, और शक्ति, और सम्मान प्राप्त करता है, भगवान की बिल्कुल वही पूजा प्राप्त करता है जैसा कि भगवान ने अध्याय 4 में किया था। अब, यीशु मसीह अध्याय 5 में प्राप्त करता है। और क्या महत्वपूर्ण है इसके बारे में यह है कि उन्हें यह प्रशंसा सख्त, एकेश्वरवादी पूजा के संदर्भ में मिलती है।

अर्थात्, यदि आप अध्याय 4 पर वापस जाते हैं, तो अध्याय 4 में दृश्य असामान्य या कुछ भी नया नहीं रहा होगा, जिसमें भगवान अपने सिंहासन पर बैठे हैं, और सारी सृष्टि पर संप्रभु हैं, और पूरे स्वर्ग की पूजा प्राप्त कर रहे हैं। यह किसी भी यहूदी पाठक के लिए अजीब या चौंकाने वाला नहीं होगा। लेकिन अध्याय 5 एक मोड़ पेश करता है।

ऐसे एकेश्वरवादी संदर्भ में, अध्याय 4 में, जहां अल्फ़ा और ओमेगा, प्रथम और अंतिम के रूप में ईश्वर ही पूजा के योग्य है, और सृष्टि में किसी अन्य चीज़ की पूजा करना शुद्ध मूर्तिपूजा है। अब, लेखक का कहना है कि, न केवल यीशु मसीह को वही पूजा मिल रही है जो भगवान ने अध्याय 4 में उन्हीं व्यक्तियों द्वारा की थी, बल्कि अब यीशु को ठीक उसी सिंहासन पर रखकर भी ऐसा कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, श्लोक 13 को देखें।

तब मैं ने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र में, और जो कुछ स्वर्ग में है, उस सब को जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमे के लिये गाते हुए सुना। तो, अब, यह अंतिम भजन एक ही सांस में सिंहासन पर बैठे भगवान और मेमे दोनों की पूजा करता है। इससे भी दिलचस्प बात यह है कि प्रकाशितवाक्य में हम दो बार इस बेहद दिलचस्प घटना को देखते हैं।

यह अध्याय 19 में घटित होता है, और यह अध्याय 22 में भी, पुस्तक के बिल्कुल अंत में घटित होता है। और मैं पुस्तक के अंत में अध्याय 22 में से एक को पढ़ूंगा। अपने दर्शन के बिल्कुल अंत में, जहां एक स्वर्गदूत प्राणी जॉन को भ्रमण पर ले गया था, उसने उसे नया यरूशलेम दिखाया, और अब अपने दर्शन के बिल्कुल अंत में वह जॉन को संबोधित करता है और यहां श्लोक 8 में क्या होता है। मैं, यूहन्ना, मैं वही हूँ जिसने ये बातें सुनीं और देखीं, और जब मैं ने ये बातें सुनीं और देखीं, तो जो स्वर्गदूत मुझे ये बातें दिखाता था, उसके चरणों में दण्डवत् करने के लिये गिर पड़ा।

परन्तु स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, ऐसा मत करो। मैं तुम्हारा और तुम्हारे भाइयों, भविष्यद्वक्ताओं, और उन सब का, जो इस पुस्तक के वचन मानते हैं, और परमेश्वर की उपासना करते हैं, सहकर्मी सेवक हूँ। और ऐसा दो बार होता है।

दूसरे शब्दों में, इस देवदूत प्राणी ने भी पूजा करने से इंकार कर दिया क्योंकि केवल ईश्वर ही पूजा के योग्य है। तो, इस प्रकार के संदर्भ में जहां केवल ईश्वर ही पूजा के योग्य है और कोई अन्य प्राणी, चाहे कितना भी ऊंचा स्वर्गदूत हो, पूजा के योग्य है, कोई यीशु मसीह को ईश्वर के समान सिंहासन पर कैसे बैठा सकता है और उसी पूजा को कैसे प्राप्त कर सकता है? ईश्वर? अन्यत्र, यह दिलचस्प है कि लेखक चित्रित करेगा, हमने इसे पहले ही चर्चों को लिखे पत्रों में से एक में देखा था, कि संत स्वयं सिंहासन पर बैठेंगे और मसीह के साथ शासन करेंगे। लेकिन यहां कुछ बहुत अलग हो रहा है।

संतों की पूजा सभी के निर्माता और पूजा के योग्य के रूप में नहीं की जाती है। केवल मेमने को ही पूजा के योग्य और ईश्वर की कृपा के रूप में चित्रित किया गया है, लेकिन ऐसे संदर्भ में जो पूरी तरह से एकेश्वरवादी है। दूसरे शब्दों में, लेखक जो कर रहा है वह यह है कि, कुछ अर्थों में, यीशु मसीह ईश्वर के अस्तित्व और सार में भाग लेता है।

सख्त एकेश्वरवाद का उल्लंघन किए बिना यीशु की पूजा कैसे की जा सकती है, कि केवल एक ही ईश्वर है जो पूजा के योग्य है? और किसी भी अन्य चीज़ की पूजा करना मूर्तिपूजा है जब तक कि यीशु किसी भी तरह से ईश्वर के अस्तित्व में भाग नहीं लेता। तो, यह उस तरह की चीज़ है जिसके परिणामस्वरूप बाद में निकेन पंथ और चार्ल्सडोनिनियन क्राइस्टोलॉजी सामने आई, जिसने ईसा मसीह के ईश्वरत्व की पुष्टि की और कहा कि ईसा मसीह देवत्व के दूसरे व्यक्ति थे और ईश्वर के सार और अस्तित्व में साझा थे। उस प्रकार की भाषा का उपयोग किए बिना, हम उस विचार को यहाँ पहले से ही पूजा की वस्तु के रूप में यीशु मसीह के रूप में पाते हैं, वही पूजा जो ईश्वर को प्राप्त होती है, किसी भी अर्थ में सख्त एकेश्वरवाद का उल्लंघन किए बिना।

श्लोक 9 में जोर देने वाली एक और बात यह है कि यह दिलचस्प है कि जीवित प्राणी और 24 बुजुर्ग जो गीत गाते हैं उसे नया गीत कहा जाता है। यह नया या नवीनता शब्द महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण विचार को दर्शाता है कि भगवान यीशु मसीह के माध्यम से एक नई सृष्टि स्थापित करने जा रहे हैं, जो अध्याय 21 और श्लोक 22 में होता है। लेकिन पहले से ही एक नया गीत गाकर, ऐसा लगता है जैसे मसीह ने पहले ही उद्घाटन कर दिया है क्रूस पर उनकी मृत्यु के माध्यम से और पुजारियों के राज्य की स्थापना के माध्यम से नई रचना, जो फिर से प्रकाशितवाक्य के अध्याय 22 में भगवान के लोगों के राजाओं और पुजारियों के रूप में कार्य करने के साथ समाप्त होती है।

वे परमेश्वर की उपस्थिति में याजकों के रूप में कार्य करते हैं, और वे हमेशा-हमेशा के लिए शासन करते हैं। लेकिन पहले से ही उस नई सृष्टि का उद्घाटन यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से और उनके पुजारियों का राज्य बनने के लिए मानवता को खरीदकर किया गया है। पहले से ही नई सृष्टि का उद्घाटन हो चुका है और यह पाठ इसका जश्न मनाता है, लेकिन यह प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में संपूर्ण नई रचना की भी आशा करता है, जहां 21 पद 1 है, मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी।

इस खंड का एक और महत्वपूर्ण तत्व वह है जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, और वह मोक्ष है जो भगवान अपने लोगों के लिए प्रदान करता है। उसके राज्य की स्थापना जो सिंहासन से और इस दृश्य से जारी होती है, उसे एक नए पलायन के रूप में समझा जाना चाहिए। यही वह कविता है जिसे मैंने अभी दोबारा पढ़ा है।

यीशु उस पुस्तक को लेने के योग्य है क्योंकि वह मारा गया था, और उसने अपने लहू के द्वारा प्रत्येक जनजाति, भाषा और लोगों से परमेश्वर के लिए लोगों को या परमेश्वर के लिए लोगों को खरीदा और उन्हें याजकों का राज्य बनाया। हमने इसे रहस्योद्घाटन के ऐतिहासिक परिचय में अध्याय 1, 5, और 6 में देखा था, और अब इसे यहाँ दोहराया गया है। दूसरे शब्दों में, मारा गया मेमना, मारा गया मेमना, जिसके बारे में हमने कहा था, संभवतः यशायाह 53 और श्लोक 7 दोनों

को याद करता है, पीड़ित नौकर मार्ग में मारा गया मेमना, लेकिन फसह का मेमना भी याद दिलाता है।

यीशु के खून से, वह मानवता को छुड़ाता है, वह उन्हें मुक्त करता है जैसे उसने निर्गमन में अपने लोगों को किया था, और फिर वह उन्हें बंधन से मुक्त करता है और उन्हें पुजारियों का राज्य बनने की ओर ले जाता है। वह उन्हें स्थापित करता है और उन्हें पुजारियों के राज्य के रूप में कार्य करने के लिए बनाता है। पुजारियों के राज्य की यह भाषा निर्गमन 19, 6 के साथ एक संबंध को इंगित करती है, जहां भगवान अपने लोगों को मिस्र से बाहर ले जाते हैं और उन्हें अपने पुजारियों के राज्य के रूप में स्थापित करते हैं, जो स्वयं उत्पत्ति 1 और 2 तक जाता है। एडम और ईव उन्हें राजा और पुजारी के रूप में कार्य करना था।

उन्हें परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में सारी सृष्टि पर शासन करना था। उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में याजक बनना था और उसकी आराधना करनी थी, और अब निर्गमन 19, 6 में इज़राइल को भी यही काम करने के लिए बुलाया गया था, और अब परमेश्वर के लोग, हर जनजाति और भाषा से उसके सार्वभौमिक अंतर-सांस्कृतिक लोग, अब ऐसा करने के लिए हैं निर्गमन के लिए परमेश्वर के इरादे को पूरा करने में राजाओं और पुजारियों के रूप में कार्य करें। अब, यह नोट, श्लोक 10 के अंत में, कहता है कि पुजारियों का यह राज्य भगवान की सेवा करने के लिए है, और वे पृथ्वी पर शासन करेंगे।

अब, दिलचस्प बात यह है कि, जैसा कि आशा है कि आप में से अधिकांश लोग जानते हैं, नया नियम कई पांडुलिपियों में हमारे पास आता है। हमारे पास नये नियम के पाठ की मूल प्रतियाँ नहीं हैं। हमारे पास वह मूल प्रति नहीं है जो जॉन ने लिखी थी, लेकिन हमारे पास प्रतियों की प्रतियों की प्रतियाँ हैं।

दरअसल, हमारे पास कई प्रतियाँ हैं। कभी-कभी, वे पांडुलिपियाँ थोड़ी भिन्न होती हैं, और पाठ्य आलोचना नामक एक प्रक्रिया के माध्यम से, विद्वान उच्च स्तर के आत्मविश्वास के साथ, जो जॉन ने लिखा था, उसे पुनर्स्थापित करने में सक्षम हुए हैं। अधिकांश अंतर वैसे भी मामूली हैं, लेकिन कुछ पांडुलिपियों में वास्तव में वर्तमान काल है; अर्थात् वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।

दूसरों के पास भविष्य है; वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे। तो, सवाल यह है कि क्या यह भविष्य के शासन की प्रत्याशा है, या यह वर्तमान शासन की प्रत्याशा है? जो भी मामला हो, फिर से, पूरे प्रकाशितवाक्य में, मुझे लगता है कि यह स्पष्ट करता है कि यह संभवतः दोनों है-और क्योंकि पहले से ही, भगवान के लोग पुजारियों का राज्य हैं। परमेश्वर ने पहले से ही पुजारियों का एक राज्य बनाया है जो पृथ्वी पर उसके शासन का प्रतिनिधित्व करता है।

हालाँकि, यह पाठ संभवतः भविष्य की पूर्ति पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकता है, विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य 20 और छंद 4 और 6 जैसे ग्रंथों में। सहस्राब्दी साम्राज्य के उस मार्ग में जहां वे जीवन में आते हैं, जो लोग पीड़ित हुए हैं और जिनके सिर काटे गए हैं, वे अब हैं पुनर्जीवित किया गया, और वे इस पाठ की पूर्ति को प्रस्तुत करते हुए, एक हजार वर्षों तक मसीह के साथ शासन करते हैं। हम नई सृष्टि में अध्याय 22 को भी देखते हैं, तथ्य यह है कि अध्याय 22 पद 5 यह

कहकर समाप्त होता है, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे। तो, यह खंड, श्लोक 10 की यह अंतिम पंक्ति, वे पृथ्वी पर शासन करेंगे, शायद अध्याय 20 और 21 और 22 की भी प्रत्याशा, जहां भविष्य में, भगवान के लोग इस पृथ्वी पर मसीह के साथ शासन करेंगे।

और अध्याय 22 में, हमेशा-हमेशा के लिए एक नई रचना पर। लेकिन यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि प्रकाशितवाक्य अन्यत्र सुझाव देता है कि भगवान के लोग शासन करते हैं क्योंकि मसीह ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से पहले ही लोगों को खरीद लिया है, और पुजारियों का राज्य बनाया है। यह कविता, पुजारियों का एक राज्य बनाने और सुझाव देती है कि वे पृथ्वी पर शासन करेंगे, संभवतः दानियेल अध्याय 7 को भी दर्शाता है, जब दानियेल उस दृष्टि की व्याख्या करता है जो उसने मनुष्य के पुत्र के प्राचीन काल में राज्य प्राप्त करने के लिए आने, प्राप्त करने के लिए की थी। अधिकार, महिमा, और शक्ति, और सभी लोग उसके सामने झुकते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि श्लोक 22 में, श्लोक 21 से शुरू करते हुए, वह कहते हैं, जैसा कि मैंने देखा कि यह सींग संतों के खिलाफ युद्ध कर रहा था और उन्हें हरा रहा था जब तक कि प्राचीन दिन नहीं आए और संतों और के पक्ष में फैसला सुनाया। सबसे ऊंचे, और वह समय आया जब वे राज्य के अधिकारी हो गए। तो दानियेल 7 में भी राज्य के अधिकारी संत भी शामिल हैं। अब हम देखते हैं कि न केवल मसीह के पास अधिकार है और वह राज्य का अधिकारी है और दानियेल 7 में मनुष्य के पुत्र की भविष्यवाणी को पूरा करता है, बल्कि उसके लोग भी दानियेल 7 की पूर्ति में राज्य करेंगे। वे भी राज्य के अधिकारी होंगे और उस पर राज्य करेंगे पृथ्वी, जिसके बारे में हमने कहा था अंततः प्रकाशितवाक्य 20 में, सहस्राब्दी राज्य पाठ में, और फिर उससे भी आगे 21 और 22 में नई रचना में पूरा होता है।

एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह भाषा अभी भी छंद 9 और 10 में पाई जाती है, यह हर जनजाति और भाषा और लोगों और राष्ट्र के लोगों की भाषा है। यह भी वह भाषा है जो मुख्य रूप से डैनियल की पुस्तक से निकली हुई प्रतीत होती है। वास्तव में, आप इसे पाते हैं, आपको शब्दों की एक समान सूची मिलती है जो लोगों को संदर्भित करती है, न केवल यहूदी राष्ट्र को, बल्कि राष्ट्रों में आम तौर पर गैर-यहूदी लोगों को भी।

आपको डैनियल में कई स्थानों पर इस तरह की भाषा मिलती है, उदाहरण के लिए, अध्याय 3 और छंद 4 और 7 से शुरू करते हुए। अध्याय 3 में, वह कहता है, इसलिए, जैसे ही उसने बैकअप लिया और 4 पढ़ा, वह 7 था, फिर हेराल्ड ने ऊंचे स्वर से घोषणा की, तुम्हें यही करने का आदेश दिया गया है। यह नबूकदनेस्सर के संदर्भ में है, जिसके लिए हर किसी को एक छवि के सामने झुकना पड़ता है। हे लोगों, राष्ट्रों, और हर भाषा के मनुष्यों, तुम्हें यही करने की आज्ञा दी गई है।

जैसे ही आप आवाज सुनते हैं तो झुक जाते हैं। और फिर बाद में आयत 7 में, इसलिए, जैसे ही उन्होंने नरसिंगे, बांसुरी, सारंगी, वीणा, और हर तरह के संगीत की आवाज़ सुनी, सभी लोग, राष्ट्र और हर भाषा के लोग गिर पड़े और छवि की पूजा की। और फिर, उदाहरण के लिए, अध्याय 7 और श्लोक 14 में, जो महत्वपूर्ण है क्योंकि जॉन इस पाठ में दानियेल 7 को चित्रित कर रहा है, दानियेल 7 कहता है, उसे अधिकार दिया गया था, मनुष्य का पुत्र जो प्राचीन काल से आता है

एक प्राप्त करने के लिए राज्य, उसे अधिकार, महिमा, संप्रभु शक्ति दी गई, सभी लोगों, राष्ट्रों और हर भाषा के लोगों ने उसकी पूजा की।

दिलचस्प बात यह है कि आप देखेंगे कि उनकी तीन श्रेणियां थीं। यदि आप डेनियल का ग्रीक अनुवाद सेप्टुआजेंट पढ़ते हैं, तो इसमें वास्तव में चार शामिल हैं, ठीक वैसे ही जैसे प्रकाशितवाक्य में है। पुनः, प्रकाशितवाक्य के चार पहलू हैं: प्रत्येक जनजाति, भाषा, लोग और राष्ट्र।

और ग्रीक अनुवाद, सेप्टुआजेंट, डेनियल के एलएक्सएक्स में भी चार गुना विभाजन शामिल है। इसके बारे में दिलचस्प बात यह है कि जॉन तब क्या करता है, और यह शेष अध्याय में एक महत्वपूर्ण विषय का परिचय देता है जिसका दोहरा महत्व है। सबसे पहले, क्या अब ईश्वर के लोग हैं कि मसीह अपने वादों को पूरा करेगा और पुजारियों का एक राज्य बनाएगा जो अब राष्ट्रीय इज़राइल तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अब ईश्वर के एक अंतर-पार-सांस्कृतिक सार्वभौमिक लोग हैं जिनमें हर जनजाति शामिल है। और भाषा और लोग और भाषा, जिसमें इज़राइल भी शामिल है, लेकिन अब केवल इज़राइल तक ही सीमित नहीं है।

अब, यीशु मसीह में विश्वास वह मानदंड है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति परमेश्वर के सच्चे लोगों का सदस्य बन सकता है। इसलिए, पूरे प्रकाशितवाक्य में, हम इसे बार-बार घटित होते देखेंगे, जहां पुराने नियम में इज़राइल को दिए गए वादे अब पूरे होते हैं, न केवल राष्ट्रीय इज़राइल के माध्यम से, बल्कि ईश्वर के सार्वभौमिक पार-सांस्कृतिक लोगों के माध्यम से, लोग प्रत्येक जनजाति और भाषा और भाषा से। और हम यहां इस तथ्य को देखते हैं कि निर्गमन 19.6, अब प्रत्येक भाषा, जनजाति और भाषा के लोगों द्वारा पूरा किया गया है।

दूसरा कारण यह महत्वपूर्ण है कि ईश्वर को अपना राज्य स्थापित करने के लिए, हमने कहा कि प्रकाशितवाक्य का वह भाग यह दिखाना है कि कैसे ईश्वर की संप्रभुता और उसका शासन, जिसे स्वर्ग में पूरी तरह से स्वीकार किया जाता है और स्वर्ग में साकार किया जाता है, वह अंततः कैसे कार्यान्वित होता है धरती पर? इसका मतलब यह है कि शैतान और इस दुनिया और रोमन साम्राज्य जैसे मानव शासकों और अधिकारियों के राज्य को छीन लिया जाना चाहिए या स्थानांतरित कर दिया जाना चाहिए, और भगवान और मेम्ने, यीशु मसीह को स्थानांतरित कर दिया जाना चाहिए। हालाँकि, इसका मतलब यह भी है कि भगवान को उन लोगों को भी बचाना होगा जो शैतान के शासन के अधीन हैं और रोम जैसे दुष्ट साम्राज्य के शासन के तहत हैं, और अब उन्हें उन्हें अपने राज्य में स्थानांतरित करना होगा। तो, इसका मतलब यह है कि अब सभी राष्ट्र, पूरे प्रकाशितवाक्य में एक महत्वपूर्ण विषय है, वे सभी राष्ट्र जो खुद को शैतान के बंधन में और रोम और मानव राज्यों के दमनकारी शासन के तहत पाते हैं, अब उनसे बचाए गए हैं और शासक के अधीन स्थानांतरित किए गए हैं। भगवान और मेम्ना।

और यहाँ श्लोक 9 और 10 में यही चल रहा है। परमेश्वर ने लोगों को यीशु मसीह के माध्यम से खरीदा है और अब उन्हें अपने शासन का प्रतिनिधित्व करने के लिए, पृथ्वी पर अपनी उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करने के लिए अपना राज्य और पुजारी बनाया है। तो, शैतान से, जानवर से भगवान और मेमने तक राज्य के इस हस्तांतरण में शैतान और जानवर के शासन के तहत, अब

पुजारियों का राज्य बनने के लिए, सभी राष्ट्रों के लोगों का, इसके विषयों का हस्तांतरण भी शामिल है। परमेश्वर और मेमने के लिये।

यह भी दिलचस्प है कि इस वाक्यांश का कोई न कोई रूप, राष्ट्र, लोग, जनजातियाँ, भाषाएँ आदि, इस वाक्यांश का कोई न कोई रूप पूरे प्रकाशितवाक्य में सात बार आता है। तो, यह शायद जानबूझकर किया गया है, संयोग नहीं। जॉन ने संभवतः जानबूझकर इस वाक्यांश को सात बार दोहराया है।

आप इसे यहां अध्याय 5 और श्लोक 9 में पाएंगे। हम इसे अध्याय 7 और श्लोक 9 में, अध्याय 10 और श्लोक 11 में, अध्याय 11 और श्लोक 9 में, और अध्याय 13 और श्लोक 7 में जानवर के शासन के संदर्भ में पाएंगे। पृथ्वी पर, फिर अध्याय 14, श्लोक 6, और अंत में अध्याय 17 और श्लोक 15। तो, उन सात बार, आपको इस चार गुना वाक्यांश का कुछ संस्करण मिलता है जिसे हम यहां अध्याय 5 और श्लोक 9 में पाते हैं, हर जनजाति और भाषा के लोग और लोग और राष्ट्र। अंत में, आखिरी बात जो मैं कहना चाहता हूं, दिलचस्प बात यह है कि अध्याय 5, 11 और 12 में, विशेष रूप से श्लोक 12 में, जो उस भजन का गठन करता है जो यीशु मसीह की प्रशंसा और सम्मान में गाया गया था, इस तथ्य का जश्न मनाते हुए कि वह योग्य है। स्वयं ईश्वर के साथ, वह सारी सृष्टि द्वारा पूजा किए जाने के योग्य है, और वह पुस्तक लेने, उसे खोलने और उसकी सामग्री को क्रियान्वित करने के योग्य है।

उसे दिए गए आरोपों पर ध्यान दें, जो सिंहासन पर बैठा है, और मुझे खेद है, वह मेम्ना योग्य है जो शक्ति और धन, ज्ञान और ताकत और सम्मान, महिमा और प्रशंसा प्राप्त करने के लिए मारा गया था। ध्यान दें, दिलचस्प बात यह है कि यह सात गुना है। ध्यान दें कि सात तत्वों का उल्लेख किया गया है : प्रशंसा और सम्मान, महिमा और शक्ति, और मैं पद 13 पर हूं, शक्ति और धन और ज्ञान और ताकत और सम्मान और महिमा और प्रशंसा।

सात तत्व दिए गए हैं, फिर से, शायद मसीह को दी गई पूजा और प्रशंसा की पूर्णता या पूर्णता को इंगित करने के लिए और वह प्रशंसा जिसके वह हकदार हैं। यह दिलचस्प है। आप पुराने नियम में इसकी अनेक समानताएँ पा सकते हैं।

अधिक दिलचस्प में से एक 1 इतिहास अध्याय 29 और श्लोक 11 में डेविड की प्रार्थना है। मैं श्लोक 10 भी पढ़ूंगा। दाऊद ने सारी सभा के साम्हने यहोवा की स्तुति की, और कहा, हे यहोवा, हमारे मूलपुरुष इस्राएल के परमेश्वर, युग युगान्तर तक तेरी स्तुति हो।

हे प्रभु, महिमा, शक्ति, महिमा, ऐश्वर्य और वैभव, स्वर्ग और पृथ्वी पर सब कुछ आपका ही है। आप इसी तरह की अन्य प्रशंसाएँ पा सकते हैं, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि, मुझे लगता है, संयोग से नहीं, बल्कि जानबूझकर, न केवल पुराने नियम का संकेत है, भगवान को दी गई प्रशंसा और अब मसीह को दी गई है, बल्कि यह दिलचस्प है कि यह सात गुना है। फिर, यह संभवतः पूर्णता और पूर्णता को इंगित करने वाले नंबर सात के रूप में खेल रहा है।

अब, दिलचस्प बात यह है कि इसकी तुलना श्लोक 13 में गाए गए अगले और आखिरी भजन से की जाए, जहां स्वर्ग और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे के सभी प्राणी आते हैं, और वे अब सिंहासन पर बैठे व्यक्ति के लिए गाते हैं और मेम्ना, और यहाँ वे क्या कहते हैं, प्रशंसा और सम्मान और महिमा और शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए है। तथास्तु। मजे की बात है कि यह प्रशंसा चौगुनी ही है।

केवल चार वस्तुओं का उल्लेख किया गया है, हालाँकि वे मेमने से पहले कही गई बातों से मेल खाती हैं। हालाँकि, यह दिलचस्प है कि केवल चार का उल्लेख किया गया है। मेरा सुझाव है कि, फिर से, शायद यह जानबूझकर किया गया है। चार वह संख्या है जो संपूर्ण पृथ्वी को दर्शाती है, जैसे कि पृथ्वी के चार कोने।

हमने इसके बारे में थोड़ी बात की, जिसमें चार सारी सृष्टि के प्रतीक हैं। यह यहाँ उपयुक्त होगा क्योंकि श्लोक 13 की शुरुआत में, यह सारी सृष्टि ईश्वर की स्तुति करती है। तो, यह स्वाभाविक है कि संख्या चार एक भूमिका निभाएगी, और संपूर्ण सृष्टि के अनुरूप चार तत्व होंगे, संपूर्ण सृष्टि अब ईश्वर की पूजा कर रही है।

फिर, यह संभवतः सार्वभौमिक पूजा और प्रशंसा की आशा करता है जो अध्याय 21 और 22 में नई सृष्टि में स्पष्ट और मौजूद है। इसलिए, अध्याय 5 ने प्रदर्शित किया है कि भगवान सभी चीजों का निर्माता है, और इस वजह से, भगवान एक संप्रभु निर्माता है सभी चीजों का और अपनी सारी सृष्टि पर प्रभुत्व रखता है। इसी कारण वह पूजनीय है। और इसलिए, सारा स्वर्ग परमेश्वर के सिंहासन को घेरता है, जो उसकी शक्ति, अधिकार और संप्रभुता का प्रतीक है। सारी सृष्टि ईश्वर को घेरे हुए है, समस्त सृजित व्यवस्था पर उसकी पवित्रता और संप्रभुता को पहचानती है।

लेकिन यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि ईश्वर ने अपनी रचना को नहीं छोड़ा है। धारणा, एक अर्थ में, अध्याय 4 और 5 के बीच की धारणा यह है कि पाप ने किसी तरह उसकी बनाई गई व्यवस्था को कलंकित और खराब कर दिया है। तो, अध्याय 5, पाप को मानना और बुराई को मानना, यह मानना कि शैतान अब दुनिया का शासक है, यह मानते हुए कि जानवर अब उन चीजों को नियंत्रित करता है जिन पर पहली शताब्दी में, रोमन साम्राज्य के रूप में, दुष्ट, दुष्ट, दमनकारी शासन शासन करते हैं शैतान के साथ इस पृथ्वी के पीछे मुख्य प्रेरणा है।

लेकिन अध्याय 5 हमें बताता है कि भगवान ने अपनी रचना को नहीं छोड़ा है, बल्कि इसके बजाय भगवान ने अब अपनी रचना को पुनः प्राप्त करने और छुड़ाने के लिए कार्य किया है, मुख्य रूप से अपने लोगों पर ध्यान केंद्रित किया है। लेकिन हम अध्याय 21 में देखने जा रहे हैं और अंततः भौतिक पृथ्वी को भी। इसलिए ईश्वर ने अपनी रचना का त्याग नहीं किया है, बल्कि अपने पुत्र की बलिदानी मृत्यु के माध्यम से, जिसने विजय पा ली है, ईश्वर ने अपनी रचना को पुनः प्राप्त करने, उसे सही करने, उसे शैतान की दमनकारी शक्तियों से बचाने के लिए एक योजना बनाई है, उसे गति प्रदान की है। और बुराई और जानवर, और इसे एक नए रचनात्मक कार्य में अपने इच्छित लक्ष्य तक पुनर्स्थापित करना जिसे हम प्रकाशितवाक्य के अध्याय 21 और 22 में पूरा पाते हैं।

तो फिर, अध्याय 5 को देखने के बाद, दृश्य अब किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा निर्धारित किया गया है जो स्कॉल लेने और इसे खोलने के योग्य है, यीशु मसीह, अपनी बलिदान मृत्यु के माध्यम से, किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ रहा है जो अब स्कॉल लेने और इसे खोलने के योग्य है, वह पुस्तक जिसमें न्याय, उद्धार और उसके राज्य की स्थापना के लिए परमेश्वर की योजना शामिल है। अब प्रकाशितवाक्य अध्याय 6 के लिए मंच तैयार है। और फिर, अध्याय 6 को हमें अध्याय 5 की निरंतरता के रूप में समझना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि अध्याय 6 में अब क्या होता है कि अध्याय 5 से स्कॉल को सील करने वाली मुहरें अब खोली गई हैं। और जैसे ही सात मुहरों में से प्रत्येक को पुस्तक से हटा दिया जाएगा, अध्याय 6 में कुछ घटित होगा। अध्याय 6 के बारे में दूसरी दिलचस्प बात यह है कि दृश्य अब बदलने जा रहा है।

अध्याय 4 और 5 में, दृश्य एक स्वर्गीय दृश्य था, जहां जॉन, जैसा कि हमने अध्याय 4 की शुरुआत में देखा था, जॉन को स्वर्ग में बुलाया गया और भगवान की संप्रभुता की एक झलक पाने की अनुमति दी गई, ताकि भगवान के प्रकट होने के बारे में कुछ देखा जा सके। मुक्ति और मोक्ष की योजना बनाएं और अपनी रचना और अपने लोगों को अपने लिए पुनः प्राप्त करें। जॉन को इसे एक दर्शन में देखने का सौभाग्य मिला है। अब यह दृश्य वापस पृथ्वी पर आ गया है क्योंकि यह पुस्तक, जिसे उसने स्वर्ग में देखा था, मेमे द्वारा खोला जाना शुरू हो गया है, जो ऐसा करने के योग्य है।

पुस्तक को खोलना शुरू हो जाता है, और हम देखना शुरू करते हैं कि न्याय और मोक्ष दोनों, विशेष रूप से न्याय, अब सिंहासन से और मुहर से कैसे जारी किया जाएगा, फिर से मसीह ने इसे पकड़ लिया और अपनी मृत्यु के परिणामस्वरूप इसकी मुहरें खोलना शुरू कर दिया। और पुनरुत्थान और ऐसा करने का उसका अधिकार और क्षमता। अब, अध्याय 6 के बारे में क्या अनोखा है, जो अध्याय 5 में पुस्तक से सात मुहरों के खुलने का वर्णन करता है? जो अद्वितीय है वह अध्याय 6 में है, और हम इसे अन्यत्र घटित होते हुए देखेंगे, लेकिन अध्याय 6 में, केवल छह मुहरें खुलती हैं। सातवीं मुहर वास्तव में अध्याय 8 तक नहीं खोली जाती है। बीच में, एक अध्याय है, अध्याय 7, जो कार्य करता है। अधिकांश टिप्पणियाँ कहती हैं कि यह एक अंतराल के रूप में कार्य करता है, और इसमें शायद कुछ सच्चाई है।

हालाँकि मैं यह नहीं कहना चाहूँगा कि यह एक विषयांतर है जिसका मुहरों से कोई लेना-देना नहीं है, यह भी गलत होगा। हम अध्याय 7 को देखेंगे और वहां पहुंचने पर इसके कार्य के बारे में थोड़ी बात करेंगे। लेकिन जब हम अध्याय 6 पढ़ते हैं, जैसा कि हम एक क्षण में करेंगे, पहली बात जो आप ध्यान देंगे वह यह है कि केवल छह मुहरें वास्तव में खोली या खोली जाती हैं, और सातवीं को अध्याय 8 की शुरुआत तक नहीं हटाया जाता है। और फिर वह मध्यवर्ती अध्याय है, अध्याय 7, जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे।

अध्याय 6 में मौजूद मुहरों की एक और दिलचस्प विशेषता यह है कि आखिरी मुहर, श्लोक 12 से 17 में संख्या 6, हमें इतिहास के अंत तक ले जाती हुई प्रतीत होती है। ऐसा लगता है कि यह हमें अंतिम न्याय तक ले आता है, जिसे धर्मशास्त्री ईसा मसीह का दूसरा आगमन कहते हैं। और हमने प्रकाशितवाक्य की प्रस्तावना में इस बारे में थोड़ी बात की।

पुस्तक, एक तरह से, अस्थायी रूप से यहीं रुक सकती है। यह बहुत ही असंतोषजनक अंत होगा क्योंकि यह परमेश्वर के लोगों के उद्धार के बारे में कुछ नहीं कहता है। अध्याय 6 एक निर्णय दृश्य में समाप्त होता है।

लेकिन ऐसा लगता है कि यह हमें दुनिया के अंत तक, मसीह के दूसरे आगमन तक ले आता है। हालाँकि, जैसा कि आप जानते हैं, हमें अभी भी कई और अध्याय पढ़ने हैं, प्रकाशितवाक्य में 18 और अध्याय। लेकिन जैसा कि हमने कहा, रहस्योद्घाटन अस्थायी रूप से चक्रित होता प्रतीत होता है।

अर्थात्, यह आपको अलग-अलग छवियाँ देता है और आपको इतिहास के अंत में जॉन के दिन की परिणति के अलग-अलग दृष्टिकोण देता है, जिसे इतिहास के अंत और इतिहास की अंतिम समाप्ति और उसकी योजना के लिए भगवान के इरादे की पृष्ठभूमि के प्रकाश में देखता है। अंतिम न्याय और मोक्ष के लिए। और हम पाते हैं कि यह यहाँ पहले से ही हो रहा है। हम बस एक क्षण में उस पर और अधिक गौर करेंगे।

समझने योग्य एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि पहली चार मुहरें एक साथ चलती प्रतीत होती हैं, जैसा कि अधिकांश लोग पहचानते हैं। वे दो दृष्टिकोणों से एकजुट हैं। नंबर एक तथ्य यह है कि केवल पहली चार मुहरों को ही घोड़ों के रूप में पहचाना जाता है।

और हम देखेंगे कि ऐसा क्यों है। तो, वस्तुतः, पहली चार मुहरें एक साथ जुड़ी हुई हैं क्योंकि चारों को चार घोड़ों द्वारा दर्शाया गया है। और फिर दूसरा, तार्किक रूप से, वे एक साथ चलते प्रतीत होते हैं, जैसा कि हम बस एक क्षण में देखेंगे।

अर्थात्, तार्किक रूप से, पहली चार मुहरें आपस में गुंथी हुई प्रतीत होती हैं। वे एक-दूसरे से उत्पन्न या संबंधित भी प्रतीत होते हैं। और हम उस पर गौर करेंगे।

इससे पहले कि हम अध्याय 6 को कुछ और विस्तार से देखें और पढ़ें, मैं अध्याय 6 को फिर से पढ़ना चाहता हूँ, लेकिन मैं संक्षेप में एक प्रश्न उठाना चाहता हूँ कि जब हम अध्याय 8 और 9 पर पहुँचेंगे तो हम थोड़ा और अधिक विस्तार से निपट सकते हैं। और अध्याय 16 भी। और यह एक बात है जिस पर आप प्रकाशितवाक्य पढ़ते समय ध्यान देते हैं। पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता यह है कि ऐसा लगता है, कम से कम अध्याय 4 से 22 के मध्य में, इस खंड के केंद्र में प्रमुख विशेषताओं में से एक सात मुहरों के रूप में सात विपत्तियों की तीन गुना पुनरावृत्ति है, सात तुरहियाँ, और सात कटोरे।

यहां अध्याय 6 और अध्याय 8 में सात मुहरें पाई गईं, और फिर अध्याय 8 और 9 में सात तुरहियों का वर्णन किया गया है। सात तुरहियाँ फूँकी जाती हैं, और अधिक विपत्तियाँ फैलती हैं। और फिर, अंततः, अध्याय 16 में, हम सात कटोरे उंडेले हुए पाते हैं।

तो, सात मुहरों, सात तुरहियों और सात कटोरे के रूप में सातों की यह तीन गुना श्रृंखला प्रकाशितवाक्य के इस खंड में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती प्रतीत होती है। और एक प्रश्न जो उठता है वह यह है कि इनका तात्पर्य क्या है? सातों की ये तीन श्रृंखलाएँ क्या दर्शाती हैं? और वे

एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं? चूँकि वे सभी सात की श्रृंखला में हैं, वे सभी विपत्तियाँ, न्याय विपत्तियाँ हैं जो पृथ्वी पर घटित होती हैं और पृथ्वी और मानवता पर प्रहार करती हैं। और विशेष रूप से जब हम अध्याय 8, 9, और 16 पर पहुँचते हैं, तो हम देखेंगे कि उन दो खंडों में होने वाले निर्णयों में थोड़ा सा ओवरलैप है।

तो, सवाल यह है कि ये क्या हैं, और ये एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं? उनके रिश्ते को समझाने की एक संभावना सात के इन तीन सेटों को देखना है। फिर से, हम अध्याय 6 से 16 में मुहरों, तुरही और कटोरे के बारे में बात कर रहे हैं। इसे देखने का एक तरीका यह है कि निर्णयों की ये श्रृंखला कालानुक्रमिक क्रम में होती है।

अर्थात्, सबसे पहले, जब वे समाप्त हो जाते हैं तो मुहरें होती हैं, तब तुरहियां होती हैं, और जब तुरहियां समाप्त हो जाती हैं, तब कटोरे होते हैं। तो, सात के तीन समूहों के बीच एक प्रगति है। और कुछ तो यह भी कहेंगे कि वे दूरबीन तरीके से भी कार्य कर सकते हैं।

याद रखें हमने कहा था कि सातवीं मुहर अध्याय 8 तक नहीं खुलती है, लेकिन अध्याय 8 और 9 में तुरहियाँ हैं। तो, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि सातवीं मुहर में वास्तव में तुरही हैं। तब आप देखेंगे कि सातवीं तुरही अध्याय 11 के बाद तक नहीं खोली जाती है।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि सातवीं तुरही में वास्तव में सात कटोरे हैं। तो, यह एक दूरबीन की तरह है, और जब आप इसे बाहर निकालते हैं तो प्रत्येक में बाकी भाग शामिल होते हैं। इसलिए, कई लोगों ने मुहरों, तुरही और कटोरे को कालानुक्रमिक क्रम को इंगित करने वाले के रूप में देखा है।

सबसे पहले, मुहरें लगती हैं, उसके बाद तुरही बजाई जाती है, उसके बाद कटोरे होते हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण दृष्टिकोण और सामान्य दृष्टिकोण जो रहस्योद्घाटन को एक प्रकार के चक्र के रूप में देखने पर निर्भर करता है जो खुद को दोहराता है उसे पुनर्पूजीकरण दृश्य के रूप में जाना जाता है। यानी, सात की इन श्रृंखलाओं में से तीनों, मुहरें, तुरही और कटोरे, एक ही समय अवधि के दौरान लगभग समान घटनाओं का जिक्र कर रहे हैं।

ग्रेग बील ई, रहस्योद्घाटन पर अपनी टिप्पणी में, इस दृष्टिकोण को रखते हैं, और उनका तर्क है कि जब आप उन्हें ध्यान से देखते हैं, विशेष रूप से तुरही और कटोरे, तो उनमें से कई के समान होने का कारण यह है कि वे समान घटनाओं का जिक्र कर रहे हैं। और वह कहेंगे कि अध्याय 6 में मुहरों के साथ भी यही सच है। इसलिए, मुहरें, तुरही और कटोरे विभिन्न घटनाओं, निर्णयों और समय अवधियों का उल्लेख नहीं करते हैं। यह रहस्योद्घाटन की चक्रीय प्रकृति या पुनर्पूजीकरण का हिस्सा है।

यानी, बील चर्च के इतिहास के संपूर्ण विस्तार पर जो तर्क देता है, वह केवल तीन अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। चर्च का सारा इतिहास, पहली शताब्दी से शुरू होकर ईसा मसीह के दूसरे आगमन तक, इन निर्णयों की विशेषता हो सकता है जो भगवान पृथ्वी पर प्रकट करते हैं। तो, हमें जो समझना है वह यह है कि ये कालानुक्रमिक क्रम में नहीं हैं बल्कि दोहराए जा रहे हैं।

फिर, एक ही घटना को देखने के अलग-अलग दृष्टिकोण और अलग-अलग तरीके हैं। कोई इसकी तुलना फुटबॉल खेल, बेसबॉल खेल, बास्केटबॉल खेल, सॉकर, या किसी अन्य खेल को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखने से कर सकता है। आप घटना को वास्तविक समय में देखते हैं, लेकिन फिर तत्काल रीप्ले में कैमरा क्रू धीमा हो जाएगा, और वे आपको उसकी एक और तस्वीर देंगे।

फिर, शायद एक अलग कोण से और जूम अप करने पर, वे आपको एक और दृश्य देंगे। यह सब एक ही नाटक में एक ही घटना है लेकिन अलग-अलग दृष्टिकोण से। तुरही या मुहरों, तुरही और कटोरे को देखने के इस तरीके को समझने का यह एक तरीका हो सकता है।

इसे देखने का एक और तरीका, और वह जिसे मैं पसंद करूंगा, लेकिन जब हम अध्याय 8, 9, और 16 पर पहुंचेंगे तो हम इसे और अधिक विस्तार से देखेंगे, जिसे एक प्रगतिशील दृष्टिकोण कहा जा सकता है। यानी, यह एक और दो को जोड़ता है। तीनों के बीच कुछ ओवरलैप है, लेकिन अस्थायी और तीव्रता में प्रगति भी है।

अर्थात्, संभवतः, अध्याय 6 की मुहरें उन घटनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जो पहली शताब्दी से शुरू होने वाले संपूर्ण चर्च इतिहास की विशेषताएँ बताएंगी। मैं इस पर एक क्षण में बहस करने जा रहा हूँ जब हम अध्याय 6 और मुहरों को देखेंगे। हम देखेंगे कि ये चीज़ें पहले से ही रोमन साम्राज्य पर परमेश्वर के फैसले को चित्रित कर रही हैं।

तो, पहले से ही, मुहरें लग रही हैं और संभवतः ईसा मसीह के आने तक ऐसा होता रहेगा। हालाँकि, तब तुरहियाँ उन घटनाओं को चित्रित करेंगी जो कुछ हद तक मुहरों के साथ ओवरलैप होती हैं, लेकिन संभवतः अधिक तीव्र और अंत के करीब परिप्रेक्ष्य से थोड़ी अधिक करीब होती हैं, मसीह का दूसरा आगमन। फिर, अंत में, अध्याय 16 में कटोरे को मुख्य रूप से और भी अधिक तीव्रता से और ईसा मसीह के दूसरे आगमन के अंत के करीब परिप्रेक्ष्य से चित्रित किया जाना चाहिए, जो उन निर्णयों को चित्रित करता है जो उस दिन तक सामने आएंगे। भगवान और अंत तक.

समय और निर्णय के संदर्भ में कुछ प्रगति या ओवरलैप हो सकता है, लेकिन अस्थायी रूप से एक गहनता और प्रगति होती है। तो, यह वैसा ही है जैसे लेखक मुहरों से शुरू करता है और अंत तक ले जाने वाले ईश्वर के निर्णय को देखता है, फिर वह पीछे हट जाता है, लेकिन करीब से, अधिक गहन दृष्टिकोण से, ईश्वर के निर्णयों का वर्णन करता है जो अंत तक ले जाएगा और फिर एक बार फिर पीछे हट जाता है, लेकिन इससे भी अधिक गहन अंतिम दृष्टिकोण से, भगवान के अंतिम निर्णयों को देखता है जो वह इतिहास के अंत में समाप्त होने से ठीक पहले देता है। कुछ चीज़ें जो यह सुझाव दे सकती हैं कि यह नंबर एक है जब आप तुरही या मुहरें, तुरही और कटोरे पढ़ते हैं, तो ध्यान दें कि वे सभी आपको बिल्कुल अंत तक ले जाते हैं।

ध्यान दें कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 6, अंतिम मुहर, मुहर संख्या 6, जैसा कि हमने कहा, और जैसा कि हम देखेंगे जब हम इस खंड को और अधिक करीब से देखेंगे, आपको अंत तक, प्रभु के दिन तक, भगवान के दिन तक ले जाता है। क्रोध और मेमने का क्रोध। तो, आप पहले से ही

सबसे अंत में हैं, और अध्याय 8 और 9 में तुरहियों के साथ भी यही सच है। सातवीं तुरही अध्याय 11 में फूँकी जाती है, और इसमें ऐसी भाषा का उपयोग किया गया है जिससे लगता है कि आप अंत में हैं। परमेश्वर का राज्य, मसीह का राज्य, अंततः आ गया है, और फिर अध्याय 16 स्पष्ट रूप से आपको अंत तक भी लाता है।

तो, दूसरे शब्दों में, सभी तीन श्रृंखलाएं आपको अंत की ओर ले जाती हैं, लेकिन प्रत्येक अधिक गहन और करीबी परिप्रेक्ष्य से है, बिल्कुल अंत के थोड़ा करीब, इतिहास की समाप्ति, पृथ्वी पर भगवान के अंतिम निर्णय के थोड़ा करीब। दूसरी बात यह है कि उपयोग किए जाने वाले भिन्नों पर ध्यान दें। एक स्थान पर सीलें, सीलें मानवता के एक चौथाई हिस्से को नुकसान पहुंचाती हैं, जबकि तुरही पृथ्वी के एक तिहाई और मानवता के एक तिहाई हिस्से को नुकसान पहुंचाती हैं, जो थोड़ी बड़ी संख्या है।

जब आप अध्याय 16 में कटोरे को देखते हैं, तो उनके निर्णय की कोई सीमा नहीं होती है। तो, फिर से, अस्थायी और तीव्रता दोनों में प्रगति होती दिख रही है। फिर, चौथे और एक तिहाई को सख्त गणितीय परिशुद्धता के साथ नहीं लिया जाना चाहिए। जैसा कि हमने कहा, भिन्न तीव्रता का संकेत देते हैं, लेकिन वे क्या कर सकते हैं इसकी एक सीमा है।

और इसलिए, हमें यह जोड़ने की ज़रूरत नहीं है कि आज जनसंख्या कितनी बड़ी है और उनकी ठीक एक-चौथाई की कल्पना करें, और फिर तुरही से एक तिहाई से अधिक क्या बचा है। वह बात नहीं है। एक-चौथाई और एक-तिहाई तीव्रता लेकिन सीमा का सुझाव देते हैं।

लेकिन सीमा इतनी कम हो जाती है कि कटोरे के निर्णयों की कोई सीमा ही नहीं रह जाती। और दुनिया के अंत और ईसा मसीह के दूसरे आगमन से पहले भगवान का अंतिम निर्णय। इनके बारे में कहने के लिए एक और बात यह है कि संख्या सात शायद यह सुझाव देती है कि हमें इन्हें उस क्रम में होने वाले सात शाब्दिक निर्णयों के रूप में नहीं लेना चाहिए।

पहले यह होता है, फिर यह होता है। लेकिन फिर, सात पूर्णता और पूर्णता की संख्या है, मुहरों, तुरहियों और कटोरे में व्यक्त भगवान का सही और पूर्ण निर्णय। तो, सात फिर से आवश्यक रूप से सात अनुक्रमिक निर्णयों का सुझाव नहीं देते हैं, बल्कि सात अपने विशिष्ट प्रतीकात्मक कार्य और भूमिका निभाते हैं।

फिर, अध्याय छह में, सभी मुहरें निर्णय के अंतिम समय की प्रस्तावना के रूप में तैयार होंगी और कार्य करेंगी। और मैं उस बारे में बाद में फिर से बात करना चाहता हूँ। लेकिन ये सब बस एक तरह की चेतावनी के शॉट, तरह-तरह की प्रत्याशाएं, उस अंतिम फैसले की चेतावनियां हैं जो अभी आना बाकी है।

हम इसके बारे में अध्याय 19 और 20 में पढ़ेंगे।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र 10, प्रकाशितवाक्य 5 और 6, मेमना और स्कॉल की मुहरों का परिचय है।